موضوع الخطبة : خصائص الشريعة الإسلامي – جزء 1

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं–किस्त1

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الذين آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما)

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़

बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

आदरणीय पाठक!अल्लाह तआ़ला ने एक महान **उद्देश्य** की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

धार्मिक दृष्टिकोण से यह बात निश्चित रूप से ज्ञात है कि आकाशीय शरीअ़तें अल्लाह की ओर से अवतरित हैं,अल्लाह तआ़ला ने प्रत्येक समुदाय में उनकी भाषा बोलने वाला एक रसूल भेजा,ताकि वह उन्हें शरीअ़त पहुंचाएं जो उनकें लिए उचित हो,अल्लाह ने उन्हें बिना किसी शरीअ़त के यूं ही बेकार नहीं छोड़ा,अल्लाह का कथन है:

(ولكل قوم **هاد**)

अर्थातःतथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।

और फरमायाः (لكل جعلنا منكم **شرعة** ومنهاجا)

अर्थातःहम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया था।

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

मनुष्यों से यह कहा गया है कि वे उन पैगंबरों का अनुगमन करें जिन्हें अल्लाह ने उनकी ओर भेजा,अल्लाह का कथन है: (وما أرسلنا

من رسول إلا **ليطاع** بإذن الله)

अर्थातःऔर हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये।

अल्लाह तआ़ला ने जो नियम एवं आदेश नाज़िल फरमाए,उनमें सबसे महान तौरैत,इन्जील और क़ुरान हैं,अतः बनी इसराईल से यह परामर्श लिया कि वे अपनी शरीअ़तों की रक्षा करें,किन्तु वे नहीं कर सके,बल्कि उनमें तह़रीफ(हेर फेर)की और उन्हें नष्ट कर दिया,किन्तु क़ुरान की रक्षा का दायित्व अल्लाह ने अपने ऊपर लिया,अल्लाह का फरमान है: (إنا نحن نزلنا الذكر وإنا له **لحافظون**)

अर्थातःवास्तव में हम ने ही यह शिक्षा(क़ुर्आन)उतारी है,और हम ही उस के रक्षक हैं।

बंदो पर यह अल्लाह का कृपा ही है कि उस ने उनके लिए एक ऐसी शरीअ़त सुरक्षित रखी जिस के आलोक में वे क़यामत तक अल्लाह की पूजा करते रहेंगे।

समस्त शरीअतें एक अल्लाह की पूजा करने एवं शिर्क से दूर रहने की दावत देती हैं,अल्लाह का फरमान है: (وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحي

إليه أنه **لا إله إلا أنا فاعبدون**)

अर्थातःऔर नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वहय(प्रकाशना)करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है।अतः मेरी ही इबादत(वंदना)करो।

अल्लाह ने और फरमायाः (ولقد بعثنا في كل أمة رسولا أن اعبدوا الله

واجتنبوا الطاغوت)

अर्थातःऔर हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत(वंदना)करो,और तागूत(असुर–अल्लाह के सिवा पूज्यों)से बचो।

शरीअ़तें आंशिक विष्यों में एक दूसरे से भिन्न हैं,किन्तु मूल सिद्धांतों में एक दूसरे से सहमत हैं,और वे सिद्धांत ये हैंःअल्लाह,उसके देवदूत,उसकी पुस्तकें,उसके रसूलों,क़्यामत का दिन और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पे ईमान लाना।

अल्लाह की शरीअ़तें जिन चीजों में एक दूसरे से सहमत हैं,उनमें ये भी हैंःधर्म,सम्मान,जान व माल और ब़ुद्धि की रक्षा।

उपरोक्त मुखबंध के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों लक्षों एवं **उद्देश्यों** को समझने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इस प्राक्कथन को समझले,उसके लिए अल्लाह की उसकी नीति को समझना आसान हो जाएगा जिस के लिए अल्लाह ने शरीअ़तों को नाजिल फरमाया है।

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा पैगंबरों का श्रृंखला,क़ुरान मजीद के द्वारा पुस्तकों का श्रृंखला और इस्लामी शरीअ़त के द्वारा शरीअ़तों का श्रृंखला समाप्त किया,अल्लाह तआ़ला ने इस्लामी शरीअ़त को अनेक विशेष गुणवक्ताओं से चित्रित फरमाया है,निम्न में अल्लाह की तौफीक़ से उन विशेषताओं पर प्रकाश डाला जा रहा हैः

1.प्रथम विशेषता यह है कि इस्लाम एक एलाही व रब्बानी शरीअ़त है,जबकि इसके अतिरिक्त जितनी भी शरीअ़तें और जीवन प्रणाली आज प्रचलित हैं,वे मनुष्य के निर्माणित हैं,जिन के अन्दर मूर्ति पूजा के लक्षण पाए जाते हैं,जबकि हिन्दू धर्म एवं बुद्ध धर्म के अनुयायी पत्थरों की पूजा करते हैं,राफज़ी क़ब्रों की पूजा करते हैं,उनका इस्लाम से दूर का भी संबंध नहीं, **यद्यपि** वे स्वयं को मुसलमान कहते फिरते हैं,किन्तु गंभीर्ता तो सत्यों को दिया जाता है नामों को नहीं।

2.इस्लामी शरीअ़त की विशेषता यह है कि वह गलती से मुक्त है,अल्लाह का कथन है: (لا يأتيه **الباطل** من بين يديه ولا من خلفه تنزيل من حكيم حميد)

अर्थातःनहीं आ सकता झू ठइस के आगे से और न इस के पीछे से।उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित(अल्लाह)की ओर से।

तथा अल्लाह ने और फरमायाः (وتمت كلمة ربك صدقا وعدلا)

अर्थातःआप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है।

अतः कुरान अपनी सूचनाओं में सत्य और अपने आदेशों में न्यायी है।नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(...सर्वोत्तम बात अल्लाह की पुस्तक है और सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है)।[2]

3.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह तह़रीफ(हैर फैर)एवं परिवर्तण से सुरक्षित है,पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दीन में बिदअ़तें अविष्कार करने से मना करते हुए फरमायाः(नई नई बिदअ़तों व

---

[2] इसे मुस्लिम(867)ने वर्णन किया है।

नवाचारों से अपने आप को बचाए रखना,निसंदेह हर नई बात बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है)[3]।इस्लाम के इमामों ने हर काल में ह़दीस की पुस्तकों को ज़ईफ(प्रमाणीकरण की दृष्टिकोण से निर्बल ह़दीस)एवं मोज़ू(वह ह़दीस जिस के वर्णनकर्ताओं की श्रृंख्ला में कोई छूट बोलने वाला वर्णनकर्ता हो)वणर्नों से पवित्र करने के लिए बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं।

4.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह नष्ट होने से सुरक्षित है,क़ुरान की रक्षा के प्रति अल्लाह का फरमान है: (إنا نحن

نزلنا الذكر وإنا له **لحافظون**)

अर्थात: वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा(क़ुरान)उतारी है,और हम ही उस के रक्षक हैं।

काफिरों की षडयंत्रों,अनेक युद्धों और साजिशों के बावजूद ह़दीसे नबवी अब तक सुरक्षित हैं,जो पीढ़ी दर पीढ़ी और सदी से सदी हम तक चले आ रहे हैं।?

शरीअ़त को नष्ट होने से सुरक्षित रखने का एक उपाय यह है कि अल्लाह ने इस मिशन की पूर्ति के लिए अपनी मख्लूक में से ऐसे लोगों को प्रयोग किया जो इसे नष्ट होने से सुरक्षित रख सकें,उनका तात्पर्य वे विद्वान हैं जो पैगंबरों के उत्तराधिकारी हैं,इसी प्रकार ऐसे नेक शासक और धन व रोसूख वाले भी हैं जिन्हों ने अपनी शक्ति और धन को इस्लाम की सहायता के लिए लगा दिया,वह इस प्रकार कि ज्ञान का प्रचार प्रसार किया और इस मार्ग में(बिना हिसाब के)खर्च किया,अतः मोअ़ाविया रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:(मेरी उम्मत का एक समूह हमेशा अल्लाह के आदेश पर स्थिर रहेगा,जो व्यक्ति उनकी सहायता से दूर होगा,अथवा उनका विरोध करेगा वह अल्लाह के

---

[3]इसे मुस्लिम(867)ने जाबिर रजोअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है

आदेश आने तक उनको हानि पहुंचा सकेगा और हमेशा लोगों पर प्रभावी(अथवा उनके सामने प्रबल रहेगा)।[4]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों **उद्देश्यों** को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसका शिक्षा स्पष्ट,अपारदर्शिता,रहस्य और भूल भुलैयों से पवित्र हैं,जबकि मानवीय शिक्षा में अवश्य ही यह कमी पाई जाती है,यही कारण है कि शरअ़ी शिक्षाओं को छोटा बड़ा,छात्र और देहाती भी समझ सकता है।

- इस्लामी शरीअ़त की यह पांच उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिकों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही

[4]इसे बोखारी(3641)और मुस्लिम(1037)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।

भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें—अल्लाह आप पर कृपा कर—कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थात:अल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य**।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

लेखक:
मजिद बिन सोलेमान अर्रसी

अनुवादक:
फैजुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी